कुर्दों पहाड़ी, सासाराम, बिहार के शैलचित्र

–डॉ. डी.पी. तिवारी
अनुष्का ओझा
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

कुर्दों की पहाड़ी सासाराम मुख्यालय से 133.43 अंश पर 6.66 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पंहुचने के लिए सासाराम से बेडा मोड़ से होकर आकाशवाणी, सासाराम कार्यालय के सामने की सड़क से होकर जी0 टी0 रोड पर ताराचंडी मंदिर से आगे चलने पर दाहिने तिलौथू जाने वाली सड़क पर चल कर धौटांड़ गांव पंहुचा जा सकता है। इस सड़क के दाहिने हाथ लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर कुर्दों की पहाड़ी है (चित्र–1)।

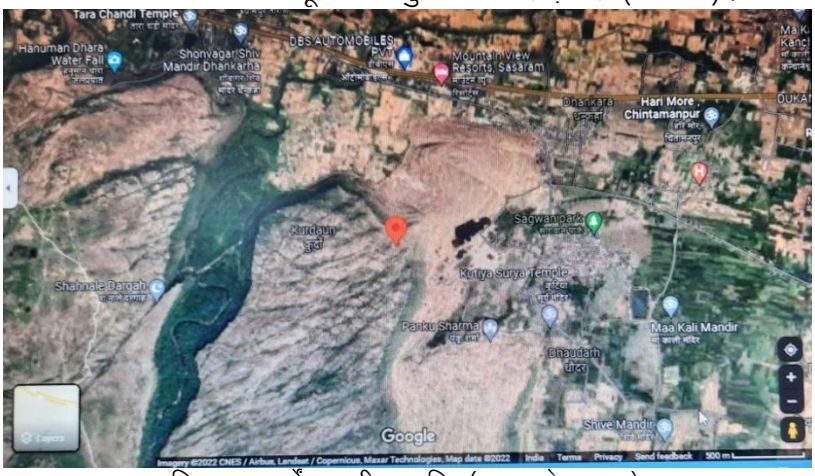

चित्र–1, कुर्दों पहाड़ी का चित्र(गूगल से साभार)

इसके उत्तरी पश्चिमी छोर पर $24^0$54′34′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 3′ 13′′ पूरबी देशान्तर पर दो शैलाश्रय हैं जिन्हें स्थानीय लोग चोरमनिया के नाम से जानते हैं। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि स्थानीय लोग इन शैलाश्रयों को मान कहते हैं जिसका तात्पर्य पहाड़ी के अन्दर का घर होता है। ये दोनों शैलाश्रय घने प्राकृतिक कंटीली झाड़ियों के बीच में हैं। यहां का पहला शैलाश्रय जिसे चोरमनिया–1 के नाम से प्रस्तुत किया जा रहा है। इसकी ऊपरी सतह पर कुछ ईंटों के टुकड़े भी प्राप्त हुए जिससे स्पष्ट होता है कि पहाड़ी के इस भाग पर किसी ने कभी ईंटों की संरचना बनाने का प्रयास किया था (चित्र–2)।

चित्र–2, चोरमनिया–1 शैलाश्रय के ऊपरी भाग पर बिखरी ईंटें

यहां से सामने की पहाड़ी एवं वनाच्छादित घाटी का एक बिहंगम दृश्य दिखाई देता है (चित्र–3)।

चित्र–3, चोरमनिया–1 शैलाश्रय से सामने की पहाड़ी एवं घाटी का बिहंगम दृश्य

यह दक्षिणाभिमुखी है तथा इसकी 5 मीटर, गहराई 3 मीटर एवं मुखद्वार पर ऊँचाई 3 मीटर है। इसके अन्दर केवल खड़ी मुद्रा में एक मानवाकृति बनी हुई मिलती है (चित्र–4)।

चित्र–4, चोरमनिया–1 शैलाश्रय में चित्रित मानवाकृति

प्रश्नगत आकृति अपने दोनों हाथों को क्षैतिज रूप से फैलाए हुए है। इसका शिर गोल, गर्दन अत्यन्त संकुचित, सीना चौड़ा तथा शरीर मांसल है। इसके पार्श्व में पैरों के पास एक चिड़िया जैसी आकृति है। शैलाश्रय की फर्श से कोई मृद्भाण्ड या पाषाण उपकरण नहीं प्राप्त हुआ। प्रायः प्राचीन शैल चित्रों में इस प्रकार का चित्रांकन नहीं मिलता। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्वमध्य काल में किसी व्यक्ति द्वारा गेरुए रंग से यह आकृति बनाई गई है।

चोरमनिया–2

पहली शैलाश्रय के दाहिने लगभग 10–15 मीटर की दूरी पर उससे बड़ी दूसरी शैलाश्रय है जिसे यहां चोरमनिया–2 के नाम से वर्णित किया गया है, स्थित है (चित्र–5)।

चित्र–5, चोरमनिया शैलाश्रय

इसमें पहले की अपेक्षा अधिक चित्र बने हुए मिलते हैं। सभी चित्र गेरुए रंग से ब्रश द्वारा बनाए गए हैं और प्रायः जीवन्त हैं। इन चित्रों में हाथ के पंजों के 28 चित्र हैं जो शैलाश्रय की दीवारों एवं छत पर बनाए गए हैं। इसकी छत इतनी ऊंची है कि वहां तक पंहुचने के लिए नीचे से किसी आधार का सहारा लेना पड़ा होगा। पंजों में दांए और बांए दोनों ही पंजों से छापे बनाए गए हैं। इनको बनाने की दिशा भी अलग–अलग है(चित्र–6–9)।

चित्र–6, शैलाश्रय की दीवार पर दांए और बांए हाथ के पंजों के छाप

चित्र–7, शैलाश्रय की छत पर बांए हाथ के पंजों के छाप

चित्र–8,शैलाश्रय की दीवार पर दांए और बांए हाथ के पंजों के छापचित्र–9,शैलाश्रय की छत पर बांए हाथ के पंजों के छाप

दूसरे प्रकार के चित्रों में मानव आकृतियां हैं। बांए हाथ की ओर बनी आकृति गहरे गेरुए रंग से बनाई गई है जो पर्याप्त रूप से स्पष्ट है। यह हाथी पर सवार है। इसके बांए हाथ में धनुष तथा दांए हाथ में नियंत्रक रस्सी है। चित्र बनाने में अनुपात का ध्यान नहीं रखा गया है कारण कि इसकी पूंछ आवश्यकता से अधिक बड़ी और मोटी बनाई गई है जो इसके घोड़ा होने का संदेह कराती है। अन्य दो मानव आकृतियां अपेक्षा कृत पुरानी हैं जो धुंधली पड़ गई हैं। इनमें उनके दोनों हाथ क्षैतिज रूप से फैले हुए दिखाए गए हैं। जानवरों का अंकन इस प्रकार किया गया है कि उनसे यह तो आभास हो जाता है कि चित्र पशु का है किन्तु उनकी सही पहचान नहीं हो पाती। एक मानवाकृति में सिर पर पगड़ी बड़ी सी बनाई गई है किन्तु शरीर के अन्य अंग रेखीय बनाए गए हैं। रेखीय अंकन में एक शिकारी को हाथ में धनुष–बाण लिए चित्रित किया गया है जिसके समीप में अन्य दो मानव आकृतियां चित्रित हैं (चित्र10–14)।

चित्र–10, हाथी पर बैठा शिकारी

चित्र–11, घेड़े पर बैठा शिकारी

चित्र–12 पगड़ी के साथ मानव

चित्र–13 तीर धनुष के साथ शिकारी

चित्र–14 भैंस पर बैठा शिकारी

एक अन्य चित्र में मरी हुई स्त्री? को कब्र में दफना कर वापस जाते हुए उसके पति ? का चित्रण किया गया है (चित्र–15)।

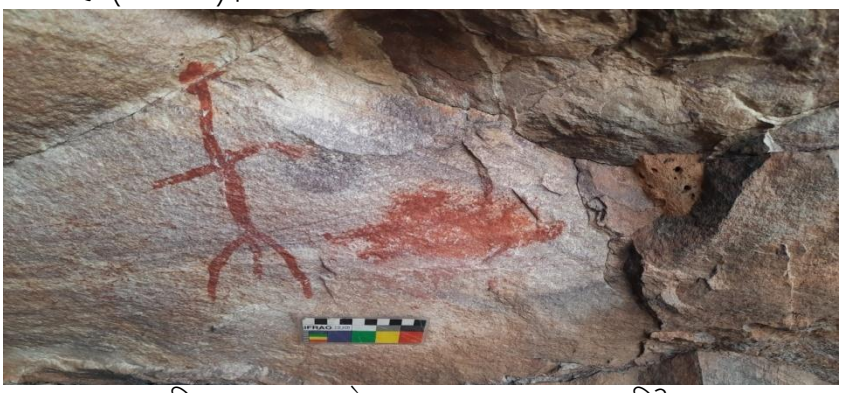

चित्र–15, मृतक को दफना कर वापस जाता पति?

इस शैलाश्रय की दीवार पर बीचो–बीच काले रंग में ब्राह्मी लिपि में एक संक्षिप्त लेख भी मिलता है। इन अक्षरों को बहुत स्पष्ट ढंग से लिखा गया है जो आसानी से पढे जा सकते हैं। अक्षरों का आकार वर्तुल है जो मौर्य कालीन ब्राह्मी के समान है किन्तु कुछ अक्षरों के ऊपर कील लगा है और उनकी मात्राएं लम्बी बनाई गई हैं। इससे ऐसा लगता है कि यह लिखावट उत्तर मौर्यकालीन या प्रारम्भिक शुंग कालीन है।

चित्र–16, ब्राह्मी लेखचित्र–17नक्षत्रों से युक्त नभमंडल

इस शैलाश्रय की छत पर विभिन्न विन्दुओं के द्वारा नक्षत्रों से युक्त नभमंडल चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है (चित्र–17)।

सतघरवा समूह के शैलचित्र

इस पहाड़ी के पूरबी छोर पर आस–पास कुल सात शैलाश्रय हैं जिनमें चित्र बने हुए मिलते हैं। आदि मानव के इन सातो शैलाश्रयों को स्थानीय लोग सतघरवा कहते हैं। इनमें प्रथम शैलाश्रय(24^0 54′ 25′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 44′′ पूरबी देशान्तर) जो 11 मीटर लम्बी, 4.5 मीटर गहरी तथा प्रवेश पर 02 मीटर ऊंची है, पूर्वाभिमुख है (चित्र–18)। इसमें 12–13 लोग सामूहिक नृत्य करते चित्रित हैं किन्तु इसका रंग फीका पड़ गया है (चित्र–20)। उसी के पार्श्व में ऊपर–नीचे दो पंक्तियों में तीन–तीन शिकारी पशुओंका शिकार करते चित्रित किए गए हैं (चित्र–19)।यहीं शान्त भाव में एक गाय का खड़ी मुद्रा में चित्र बनाया गया है। सभी चित्र गेरुए रंग से बने हैं और ताम्र पाषाण कालीन प्रतीत होते हैं[1]। इसकी फर्श पर एक लाल रंग के कटोरे

का रिम भाग प्राप्त हुआ जो इसका संकेत करता है कि उस समय के लोग भी यहां आते जाते थे।

चित्र–18, सतघरवा–1, शैलाश्रय

चित्र–19, तीन मानव आकृतियां

चित्र–20, सामूहिक नृत्य

चित्र–21, गाय/बकरी

सतघरवा–2 शैलाश्रय इस समूह के प्रथम शैलाश्रय के पूरब में 50 मीटर की दूरी पर (24^0 54′ 23′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 45′′ पूरबी देशान्तर) जो 8 मीटर लम्बी, 2.70 मीटर गहरी तथा प्रवेश पर 1.30 मीटर ऊंची है, उत्तर–पश्चिमाभिमुखी है (चित्र–22)। इसमें कुछ लोग एक बड़े आकार के जंगली सूअर का शिकार करते चित्रित हैं। जल रिसाव के कारण शिकारियों की आकृतियों का रंग उड़ सा गया है (चित्र–23)। इसकी फर्श पर कोई मृद्भाण्ड या पाषाण उपकरण नहीं प्राप्त हुआ।

चित्र–22, सतधरवा–2, शैलाश्रय

चित्र–23, जंगली सूअर के शिकार का दृश्य

सतघरवा–2 के उत्तर में लगभग 20 मीटर की दूरी पर एक बड़ा शैलाश्रय सतधरवा–3 (24^0 54′ 24′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 45′′ पूरबी देशान्तर) है। इसमें कुछ समय पहले एक साधू रहते थे जिन्होंने इस शैलाश्रय में पत्थर की ईंटें जोड़कर एक कोठरी बना दी है जो 20 मीटर लम्बी, 5.5 मीटर गहरी तथा प्रवेश पर 2.5 मीटर ऊंची है, यह उत्तर–पश्चिमाभिमुखी है (चित्र–24)।

चित्र–24, सतधरवा–3 शैलाश्रय

इस शैलाश्रय में अनेक चित्र विभिन्न कालों में बनाए गए हैं, इस कारण चित्रों के ऊपर चित्र बने हुए मिलते हैं। प्राचीनतम चित्र स्थूलकाय एवं मांसल हैं जो सफेद रंग से बनाए गए हैं तथा अब इनका रंग फीका हो गया है। इनमें जंगली भैंसा (चित्र–26), हर्षोल्लास मुद्रा में पहलवान (चित्र–27), आमने–सामने खड़े हस्ति युगल (चित्र–28), सामूहिक नृत्य दृश्य (चित्र–31) आदि हैं।इन चित्रों की विशेषता यह है कि इनकी बाहरी रेखाएं गेरुए रंग से बनाई गई हैं और उनके अन्दर सफेद रंग भरा गया है अथवा ये चित्र सफेद रंग से पुते

चित्र–25, सतधरवा–3 हाथ के पंजे का छाप

चित्र–26, सतधरवा–3 जंगली भैंसा

चित्र–27, बलिष्ठ मानवाकृतियां

पृष्ठतल पर बनाए गए हैं। इन्हीं चित्रों के ऊपर गेरुए रंग से बाद में अपेक्षाकृत छोटे आकार के चित्रों का निर्माण किया गया है जिनका आनुपातिक समन्वय अच्छा नहीं है। इन चित्रों में बकरी (चित्र–27), गाय, घोड़ा, बाघ (चित्र–28), हिरन आदि मुख्य हैं।

चित्र–28, दो हाथी, बकरी पर बैठा मनुष्य एवं चीता

चित्र–29, घर के सामने युगल

चित्र–30, बकरी

मानव एवं पशु आकृतियों के अतिरिक्त हाथ के पंजों के छाप प्रमुखता से बनाए गए हैं (चित्र–25)।

चित्र–31, सामूहिक नृत्य

चित्र–32, बकरी पर बैठा आदमी

सतघरवा–4 एक छोटा सा शैलाश्रय है जो24^0 54′ 24′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 46′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है (चित्र–33)। इसकी जिसकी लम्बाई 5 मीटर, गहराई 3.5 मीटर तथा ऊंचाई 1 मीटर है। इस मुख उत्तर की ओर खुला है। इस शैलाश्रय में मात्र एक चित्र बना है जिसमें एक मनुष्य कोई वाद्ययंत्र बजाता हुआ चित्रित है। इसमें प्रयुक्त रंग हल्का गेरुआ रंग है (चित्र–34)। इस शैलाश्रय के समीप पहाड़ी के ऊपरी धरातल पर कुछ पकी ईंटों के टुकड़े मिलते हैं जिसमें एक का परिमाप 8′′ x 8′′ x 3′′ है (चित्र–35)। इस परिमाप की ईंटें प्रायः मौर्य काल में प्रयोग की जाती हुई पाई जाती हैं।

चित्र–33, सतघरवा–4

चित्र–34, वाद्य यन्त्र के साथ आदमी

चित्र–35, वर्गाकार ईंटें

सतघरवा –5 शैलाश्रय पहले वाली शैलाश्रय के दाहिने थोड़ा ढाल पर 24^0 54′ 23′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 47′′ पूरबी देशान्तर पर है। इसकी लम्बाई 4 मीटर, गहराई 10

मीटर तथा ऊंचाई 1.5 मीटर है। इस मुख पूरब की ओर खुला है। इस शैलाश्रय में तीन चित्र गेरुए रंग से बने हैं जिनका रंग अब फीका पड़ रहा है। इन चित्रों में बाईं ओर एक चक्र बना है, उसके दांए धनुष बाण हाथ में लेकर खड़ी एक मानवाकृति है। मानवाकृति के थोड़ा नीचे दांईं तरफ एक पशु का चित्र बनाया गया है (चित्र–36)।

चित्र–36, सतघरवा–5 के चित्र

सतघरवा–6 इस समूह की 5वीं शैलाश्रय के दाहिने समान ऊंचाई पर 24^0 54′ 22′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 47′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसकी लम्बाई 10 मीटर, गहराई 7 मीटर तथा ऊंचाई 2 मीटर है। इस मुख पूरब की ओर खुला है। इस शैलाश्रय में तीन चित्र गेरुए रंग से बने हैं जिनका रंग अब फीका पड़ रहा है। इन चित्रों में विपरीत दिशा से बनाए गए पशु पर सवार दो मानव आकृतियां हैं। उनके सामने अलग से एक पशु बना है। (चित्र–37)।

चित्र–37, विपरीत दिशा से बनाए गए दो मानव

चित्र–38, हस्त छाप

चित्र–39, मानव एवं पशु

चनवा मोजरिया मान सतघरवा समूह के चित्रों के आगे पहाड़ी के पूरबी छोर पर ही जमीन से लगभग 100 मीटर की ऊंचाई पर 24^0 53′ 59′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 39′′ पूरबी देशान्तर पर चनवा मोजरिया मान नामक शैलाश्रय है। इसकी लम्बाई 5 मीटर, गहराई 4 मीटर तथा ऊंचाई 1 मीटर है। इसका मुख पूरब की ओर खुला है। इस शैलाश्रय में चित्र गहरे

गेरुए रंग से बने हैं। इन चित्रों में दो हाथ के पंजों का चित्रण (चित्र–38), डंडे के साथ खड़ी मानवाकृति तथा कुत्ता (चित्र–39) एवं विपरीत दिशा से बनाई गई दो मानव आकृतियां हैं (चित्र–40)। दूसरे प्रसंग में कोहबर के सामने मानवाकृति है (चित्र–41) तथा तीसरे प्रसंग में कतिपय विन्दु समूह एवं छोटे बच्चे का चित्र बना है (चित्र–42–43)। यह शैलाश्रय दुर्गम, संकुचित एवं इसकी फर्श अत्यन्त चिकनी है जिसपर मात्र लेट कर ही अन्दर जाया जा सकता है।

चित्र–40, मानवाकृतियां चित्र–41, कोहबर एवं मानव चित्र–42, विन्दु समूह चित्र–43, शिशु

हथिया चट्टान

यहएक विशालकाय और खड़ी शिला है। स्थानीय लोग इसे हथिया चट्टान के नाम से जानते हैं। तिरछी खड़ी होने के कारण इसका उपयोग शैलाश्रय के रूप में किया जा सकता है। यह 24^0 53′ 52′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 37′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसकी लम्बाई 10.5 मीटर, गहराई 5 मीटर तथा ऊंचाई 10 मीटर है। इसका मुख उत्तर–पश्चिम की ओर खुला है। इस शैलाश्रय में गेरुए रंग से चित्र बने हैं जिनका रंग अब फीका पड़ चुका है।कुछ चित्रों के कुछ अंश बिल्कुल नहीं दिखाई देते जिससे उनकी पहचान में कठिनाई है। इन चित्रों में खड़ी रेखाएं, शुतुमुर्ग जैसा लम्बी गर्दन वाला एक पक्षी तथा मानव एवं पशु आकृतियांहैं (चित्र–44–47)।

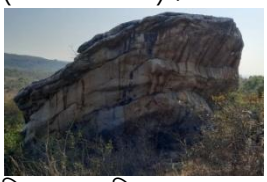

चित्र–44 हथिया चट्टान चित्र–45, खड़ी रेखाएं चित्र–46, पक्षी चित्र–47, मानव एवं पशु

लंगुरहा नामक शैलाश्रय 24^0 53′ 48′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 23′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यह 15 मीटर लम्बी, 6 मीटर गहरी तथा प्रवेश पर 2.5 मीटर ऊंची है। इसका प्रवेश द्वार पश्चिमाभिमुखी है । इसमें पर्याप्त मात्रा में चित्र दो स्तरों में बने हुए मिलते हैं। नीचे की छत पर किसी स्थानीय देवी–देवता की पूजा करते लोग दोनों तरफशस्त्र विहीन अवस्था में

प्रदर्शित हैं (चित्र–48)। यहां एक ऐसा चित्र बनाया गया है जो अपने में अभिनव है जिसमें शिकारी के साथ शिर कटे जानवर को चित्रित किया गया है (चित्र–49)। दाएं हाथ के पंजे का छाप गेरुए रंग से बनाया गया है (चित्र–50)।

चित्र–48, धार्मिक जुलूस

चित्र–49, शिकार का दृश्य

चित्र–50, पंजे का छाप

इसी छत पर एक बड़े आकार के बैल का एक्स रे चित्र है जो नव पाषाणकालीन माना जा सकता है जिसमें सवार मानव उसकी सींगों को पकड़ कर नियंत्रित कर रहा है (चित्र–51)। चित्र–52 में एक बहुत बड़ी मछली का चित्र है। इस पर बाद में अन्य चित्र बना दिए गए हैं।

चित्र–51, बैल पर सवार

चित्र–52,मछली?

सामूहिक नृत्य का दृश्य यहां पुनः बनाया गया है और नर्तकों के हाथ में पियानो जैसा वाद्य यंत्र भी है (चित्र–53)।इसके आगे दो पशु, दो विपरीत दिशाओं में मुख किए हुए धनुष बाण लिए हुए सैनिक बनाए गए हैं। इन चित्रों को अलग–अलग दिशाओं से बनाया गया है (चित्र–54)।इसी संदर्भ में एक पशु बाड़े के सामने पशुओं का चित्रण और पशु रक्षकों को भी बनया गया है (चित्र–55)। चित्र संख्या 56 में कबीले के

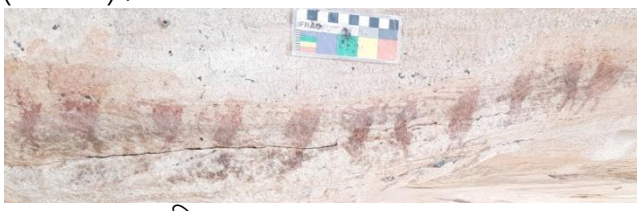
चित्र–53, समूह नृत्य

चित्र–54, सशस्त्र सैनिक

चित्र–55, पशु बाड़ा

चित्र–56, सरदार और सैनिक

चित्र–57, सैन्य प्रयाण

सरदार जिसे अपेक्षाकृत बड़ा बनाया गया है तथा उसके शिर पर नुकीला टोपा पहनाया गया है। उसके साथ उसके सैनिक भी हैं। इसके पार्श्व में पुनः सैनिकों का एक समूह चित्रित है (चित्र–57) ।सामाजिक दृश्य

चित्र–57, दम्पति

चित्र–58, ज्यामितिक डिजाइन

चित्र–59, पशु का एक्स रे चित्र

में एक दम्पति का चित्रांकन रोचक है (चित्र–57)। यहां के लोगों को ज्यामिति का भी ज्ञान था। वर्ग, आयत, त्रिभुज, आड़ी–बेंड़ी, अर्धवृत्त और सीधी रेखाओं के प्रयोग से बनाई गई एक डिजाइन बहुत महत्वपूर्ण है (चित्र–58)। इस तरह की ज्यामितिक आकृतियां ताम्र पाषाण काल में बनाई गई मिलती हैं[2]। चित्र संख्या 59 में एक्स रे शैली में बनाया गया एक पशु है। इस प्रकार इस शैलाश्रय में नव पाषाणकाल एवं ताम्र पाषाण काल के चित्र दो स्तरों में बनाए हुए मिलते है जिनमें एक ऊपर दूसरे काल के बने चित्र भी मिलते हैं।

मुर्चवा मान

यह शैलाश्रय 24^0 53′ 47′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 41′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसकी लम्बाई 7.5 मीटर, गहराई 4.60 मीटर तथा ऊंचाई 3 मीटर है। यह पूर्बाभिमुखी है (चित्र–60)। इस शैलाश्रय में गेरुए रंग से चित्र बने हैं जो कमजोर पड़ रहे हैं। इनमें लम्बी सींग वाला कूबड़ युक्त जंगली बैल[3], दोनों हाथ क्षैतिज रूप से फैलाए हुए योद्धा, बकरी और उसके पीछे चलता कुत्ता एवं नदी का चित्र मुख्य है (चित्र–61–64)।

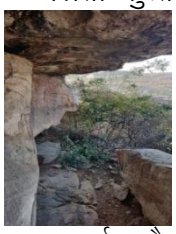
चित्र–60, मुर्चवा शैलाश्रय

चित्र–61, बैल

चित्र–62, मानवाकृति

चित्र–63, बकरी और कुत्ता

चित्र–64, नदी

चौघटिया

यह शैलाश्रय 24^0 53′ 41′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 41′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसकी लम्बाई 5.5 मीटर, गहराई 2.5 मीटर तथा ऊंचाई 1 मीटर है। यह पूर्बाभिमुखी है। इस शैलाश्रय में गहरे कत्थई रंग से चित्र बने हैं जो बड़े आकर्षक और स्पष्ट हैं। इसमें एक स्थान पर ऊपर–नीचे दो पंक्तियों में चित्र बने हैं। ऊपरी पंक्ति में 09 मानवाकृतियां सामूहिक नृत्य करती प्रदर्शित हैं। उसके नीचे आमने–सामने दो नावों पर सवार सैनिक बनाए गए हैं।

नाव चालक पतवार से नाव को गति दे रहा है। सैनिकों के पास धनुष–बाण और तलवार है जो कमर में लगी हुई दिखाई गई है (चित्र–65)। यहीं ऊपर कोने में धनुष बाण लिए दो अन्य सैनिक बने हैं (चित्र–66)। अन्य प्रसंग में एक नदी के दोनों तरफ सेनाएं युद्ध मुद्रा में चित्रित की गईं हैं जिनके हाथ में धनुष और हारपून हैं। इस दृष्य में घोड़ा तथा रथ नहीं है (चित्र–67)। ऐसा प्रतीत होता है कि इन चित्रों में किसी युद्ध का चित्रण है। दोनों पक्षों के बीच कोई नदी थी और युद्ध उस नदी के किनारे ही लड़ा गया। विजय के बाद सैनिक उल्लास के साथ नृत्य करते प्रदर्शित हैं। यह चित्रांकन ताम्रपाषाण काल का प्रतीत होता है। अधिकांश लोग युद्ध एवं सेना प्रयाण दृश्य को ऐतिहासिक काल में रखते हैं[4]

चित्र–65, सामूहिक नृत्य एवं नौका युद्ध

चित्र–66, मानवाकृति

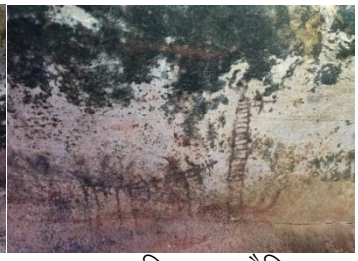
चित्र–67, सैनिक युद्ध

चपटती मान

यह शैलाश्रय 24^0 53′ 37′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 03′ 42′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसकी लम्बाई 15 मीटर, गहराई 10 मीटर तथा ऊंचाई 2 मीटर है। इसका मुख उत्तर की ओर खुला है। इस शैलाश्रय में गहरे गेरुए रंग से चित्र बने हैं पानी के रिसाव के कारण इनका रंग अब फीका पड़ चुका है। कुछ चित्रों के कुछ अंश बिल्कुल नहीं दिखाई देते जिससे उनकी पहचान में कठिनाई है। इन चित्रों में खड़ी मुद्रा में मानवाकृतियां एवं हिरन का शिकार करता मानव चित्रित हैं (चित्र–68–70)।

चित्र–68, चपटती मान शैलाश्रय

चित्र–69, मानवाकृति

चित्र–70, हिरन का शिकार

कैमूर श्रृंखला की इस पहाड़ी पर बने ये शैलचित्र केवल शैलाश्रयों पर बने हैं न कि गुफाओं में। चित्रों की शैली, आकार–प्रकार यह द्योतित करते हैं कि इस क्षेत्र के तत्कालीन लोगों का मिर्जापुर क्षेत्र में रहने वाले नवपाषाणिक–ताम्र पाषाणिक लोगों से संबंध था कारण कि ये चित्र वहां की पहाड़ियों में बने चित्रों से बहुत साम्य रखते हैं। इन शैलाश्रयों में खड़ी मुद्रा में मानव एवं पशु आकृतियां बहुतायत से बनी हैं जो रेखीय के साथ–साथ सुडौल भी मिलती हैं। पुरुषों के हाथ में तीर धनुष या लकड़ी के डंडे दिखाए गए हैं। स्त्री से पुरुष को अलग करने के

लिए पुरुषों को लिंग के साथ चित्रित किया गया है। दौड़ते पशुओं पर सवार की गति उनके उड़ते बालों द्वारा प्रदर्शित है। नृत्य के दृश्य सीधे एक पंक्ति में खड़े लोगों द्वारा प्रदर्शित है जो हाथ से एक दूसरे को या तो पकड़े हुए हैं या बगल वाले के कंधो पर रखे हुए हैं। सैन्य प्रयाण एक पंक्ति में चार से पांच सशस्त्र पुरुषों के एक दिशा में गमन के साथ दिखाए गए हैं। नदी का दृश्य सीढ़ी की तरह प्रदर्शित है। शिकार के दृश्य में जानवर शान्त भाव में खड़ा दिखाया गया है जिसपर शिकारी निशाना लगाते हुए दिखाया गया है। यह इस तथ्य का द्योतक है कि जानवर पर किस दिशा से किस अंग पर प्रहार किया जाय तो वह प्राणान्तक प्रहार होगा। मात्र एक चित्र में प्रहारोपरान्त कटे हुए शिर के साथ जानवर का चित्रण है। इस समूह के चित्रों में बलिष्ठ पहलवानों का अंकन अपने आप में अभूतपूर्व है। उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि किसी भी शैलाश्रय की फर्श या पहाड़ के किसी अन्य भाग से न तो कोई पाषाण कालीन उपकरण उपलब्ध हुआ और न ही कोई मृद्भाण्ड अवशेष। मात्र एक पूर्वमध्य कालीन कटोरे का रिम भाग सतघरवा–1 शैलाश्रय से मिल सका जो अपने में अपवाद है। इनमें से किसी शैलाश्रय से जानवरों की हड्डियां और कोयले के अवशेष भी नहीं मिले जिससे स्पष्ट है कि इनका उपयोग निवास हेतु नहीं किया गया था। इस तरह की परिस्थिति की व्याख्या क्या हो सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि नव पाषाण–ताम्र पाषाण कालीन लोग जो इन शैलाश्रयों में चित्रांकन कर रहे थे वे इस पहाड़ी पर स्थाई रूप से निवास नहीं करते थे किन्तु उनकी बस्ती इसके इतना पास अवश्य थी कि वे अपने पशुओं को चराने के लिए, जंगल से लकड़ी काटने एवं शिकार करने के लिए इस पहाड़ी पर आते थे तथावे चित्रकला प्रेमी खाली समय में इन चित्रों को बना दिया करते थे। पाषाण उपकरणों के न मिलने के लिए इस पहाड़ी का पत्थर उत्तरदाई है। यह पहाड़ी बलुए पत्थर की है जो कमजोर होने के कारण उपकरण निर्माण के लिए अनुपयुक्त थी। समीप की अन्य पहाड़ियों में जहां क्वार्ट्ज, क्वार्टजाइट, चर्ट, फ्लिंट जैसे पाषाण उपलब्ध होंगे वहां उद्योग शालाओं के मिलने की संभावना है। डॉ0 श्याम सुन्दर तिवारी ने यह बताया कि इस पहाड़ी के सामने पूरब की ओर आधा किलोमीटर की दूरी पर एक टीला था जिस पर से उन्हें नव पाषाणकालीन मृद्भाण्ड मिले थे। इस टीले पर ताम्रपाषाण काल एवं एन0 बी0 पी0 काल के भी पात्र थे किन्तु जी0 टी0 रोड के बनाने के समय टीले को पूरी तरह से काट दिया गया। यदि यह सही है तो इस समस्या का निदान मिल जाता है कि इन चित्रों का निर्माता कौन था और वह कहां रहता था। इसी संदर्भ में इस प्रश्न का उत्तर देना भी प्रासंगिक है कि इस पहाड़ी पर जगह–जगह पर पकी ईंटों से संरचनाएं बनाने का प्रयास कौन कर रहा था। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि पकी ईंटों के टुकड़े तो मिलते हैं, उनका आकार वर्गाकार है, वे 3 इंच से अधिक मोटी हैं किन्तु इनकी मात्रा बहुत कम है। चंदन पीर पहाड़ी, सासाराम पर मिलने वाले अशोक के अभिलेख के आधार पर इस गुत्थी को सुलझाया जा सकता है जिससे स्पष्ट होता है कि उसने इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार का प्रयत्न किया था। संभवतः इस काल के कुछ बौद्ध भिक्षु इस पहाड़ी पर रहते रहे होंगे जो इस क्षेत्र में बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार करने में प्रयत्नशील रहे होंगे। उन्होंने गौतम बुद्ध की मूर्तियां स्थापित करने के लिए चबूतरा बनाया होगा जिसके लिए थोड़ी मात्रा में पकी ईंटें यहां लाई गईं।भारत में विभिन्न क्षेत्रों की पहाड़ियों में शैलाश्रयों में प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल में बौद्ध भिक्षुओं के रहने के प्रमाण मिले हैं और कुछ में तो स्तूपों का बनाया हुआ चित्र भी मिला है[5]।इस क्षेत्र में गुप्त, उत्तर गुप्त, पूर्व मध्यकाल एवं

मध्यकाल में बस्ती मैदान में बनी रही और उनका इस पहाड़ी पर आना जाना बना रहा जिसके निशान इन शैलाश्रयों में मिलते हैं। आज भी आस पास के लोग पत्थर काटने एवं अपने पशुओं, भेंड़–बकरियों को चराने तथा लकड़ी काटने इस पहाड़ी पर आते हैं उनमें से कुछ अंग्रेजी जानने वाले आगन्तुकों ने शैलचित्रों पर अंग्रेजी अल्फाबेट लिखे हैं। जुआ खेलने वालों ने शैलाश्रयों की पत्थर की फर्श पर चौकड़ियां बनाईं हैं। किसी–किसी ने तो देवनागरी में अपना पूरा नाम उत्कीर्ण कर दिया है।इन शैलाश्रयों में किसी भी चित्र में बन्दूक या आग्नेयास्त्रों का अंकन नहीं है जिससे स्पष्ट है कि मुगल काल में इन शैलाश्रयों में चित्रकारी का काम नहीं किया गया।

इस पहाड़ी के कतिपय शैलचित्रों की खोज डॉ0 श्यामसुन्दर तिवारी द्वारा पूर्व में की गई थी। प्रश्नगत सर्वेक्षण उनके साथ करने से बहुत सुविधा हुई। सर्वेक्षण में श्री सिद्धनाथ पाण्डेय निवासी ग्राम धौटांड ने मार्गदर्शन किया अस्तु हम इन दोनों के प्रति सादर आभार व्यक्त करते हैं।

संदर्भः

1. तिवारी एस0 के0 एवं एस0 पी0 अवस्थी, अर्ली मैन ऑफ द इंडियन रॉक सेल्टर, दिल्ली, 2009, पृष्ठ 11–13.
2. बिश्वास एस0एस0, रॉक आर्ट ए कैटलॉग, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 137.
3. तुलनीय कुमार गिरिराज एवं अर्खिता प्रधान, राक आर्ट ऑफ फतेहपुर सीकरी रीजन, पुरा कला, जिल्द 26, 2016, पृष्ठ 15, चित्र 15.
4. चक्रवर्ती के0 के0 एवं जी0एल0 बादाम, रॉक आर्ट एण्ड आर्कियालॉजी ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 2008, में प्रकाशित लेख जोर द सेल्टर ऑफ द लार्जेस्ट रॉक पेंटिंग इन इण्डिया, पृष्ठ 185.
5. चक्रवर्ती के0 के0 एवं जी0 एल बादाम, रॉक आर्ट एण्ड आर्कियालॉजी ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 2008, पृ0 190